THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL ISSN : 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJINVALUE/
IMPACT FACTOR: 8.3
Volume–3,Issues–1 January-March:2026

माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण छात्रों की अध्ययन आदतों का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ.शुभा चतुर्वेदी
प्रोफेसर, अध्यापक शिक्षा विभाग,
जे० वी० जैन कॉलेज सहारनपुर

आशीष बर्मन
शोधकर्ता,एम. एड. (2024-26),
जे० वी० जैन कालेज सहारनपुर

सारांश :- ***इस अध्ययन का उद्देश्य "माध्यमिक स्तर के शहरी स्वं ग्रामीण छात्रों की अध्ययन आदतों का अध्ययन " का पता लगाना है। इस कारण से प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग करते हुए माध्यमिक स्तर के 100 छात्रों को न्यादर्थ के रूप में लिया गया है। प्रदतों के विश्लेषण के लिए माध्य,मानक विचलन तथा टी-परीक्षण का प्रयोग किया गया है।***

मुख्य शब्द :- *माध्यमिक स्तर, शहरी छात्र, ग्रामीण छात्र, अध्ययन आदतें।*

प्रस्तावना :- शिक्षा को आधुनिक समाज की आधारशिला माना जाता है। 21 वीं सदी में शिक्षा का उद्देश्य केवल विषयगत ज्ञान प्रदान करना नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों में प्रभावी अध्ययन आदतों, आत्म -अनुशासन, आलोचनात्मक चिंतन तथा आजीवन अधिगम की क्षमता विकसित करना भी है। वर्तमान शैक्षिक अनुसंधानो में यह व्यापक रूप रूप से स्वीकार किया गया है। कि विद्यार्थियों की शैक्षणिक सफलता उनकी बौद्धिक क्षमता से अधिक उनकी अध्ययन आदतों पर निर्भर करती है **[शर्मा (2016)]**के अनुसार अध्ययन आदतें वे व्यवस्थित व्यक्चर है। जो विद्यार्थी को अध्ययन प्रक्रिया में संक्रिय, नियमित और उद्देश्य पूर्ण बनती है। इसी प्रकार कुमार स्वं गुप्ता (2017)) ने अपने शोध में स्पष्ट किया कि जिन विद्यार्थियों की अध्ययन आदतें सुदृढ़ होती है। उनकी शैक्षणिक उपलब्धि स्वं भात्म-विश्वास दोनों उच्च स्तर के होते है।

माध्यमिक स्तर :- विद्यार्थियों के शैक्षणिक जीवन का एक निर्णायक चरण होता है। इस स्तर पर किशोरावस्था के कारण विद्यार्थियों में भावनात्मक अस्थिरता, ध्यान भटकाव तथा अध्ययन के प्रति अरुचि देखी जाती हैं। **[राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (NCERT-2017)]**ने अपने अध्ययन में यह उल्लेख किया है। कि माध्यमिक स्तर पर यदि अध्ययन आदतों का सही विकास न हो, तो विद्यार्थी आगे की दिशा में पिछड़ सकते है। भारतीय संदर्भ में शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के बीच शैक्षणिक असमानता आज भी एक गंभीर समस्या बनी हुई **[सिंह (2018)]**के अनुमार ग्रामीण क्षेत्रों में अध्ययन संसाधनों की कमी, पारिवारिक दायित्व, आर्थिक समस्याएँ तथा अभिभावकों की

सीमित शैक्षणिक जागरूकता छात्रों की अध्ययन भादतों की नकारात्मक रूप से प्रभावित करती है इसके विपरीत शहरी क्षेत्रों में उपलब्ध शैक्षणिक सुविधाएँ विद्यार्थियों को बेहतर अध्ययन वातावरणा प्रदान करती है। **[EUNESCO(2018)]**की रिपोर्ट में यह स्पष्ट किया गया है। कि शहरी छात्रों को डिजिटल तकनीक, ई-जलर्निंग प्लेटफॉर्म और शैक्षणिक सामग्री तक अधिक पहुँच प्राप्त है,जिससे उनकी अध्ययन आदतें अपेक्षाकृत अधिक संगठित और प्रभावी होती है। वहीं ग्रामीण छत्रों में डिजिटल डिवाइड के कारण अध्ययन की निरंतरता प्रभावित होती है| **[राव एवं सिंह (2023)]**के शोध में यह स्पष्ट किया गया है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययन आदतों में सुधार हेतु व्यक्तिगत मार्गदर्शन, अध्ययन कौशल. प्रशिक्षण तथा अभिभावक सहयोग अत्यंत आवश्यक है| **[कुमार (2024)]**ने यह प्रतिपादित किया कि सकारात्मक अध्ययन आदतें विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थाय और शैक्षणिक तनाव को कम करने में सहायक होती है।। **[वर्मा एवं मिश्रा (2020)]**ने अपने तुलनात्मक अध्ययन में पाया कि शहरी माध्यमिक छात्रों में समय-प्रबंधन लक्ष्य निर्धारण और आत्म-अध्ययन की प्रवृत्ति ग्रामीण छात्रों की अपेक्षा अधिक विकसित होती है। इसी प्रकार **[पटेल (2021)]**ने यह निष्कर्ष निकाला कि अध्ययन आदतों पर विधालयी वातावरण और शिक्षक मार्गदर्शन का गहरा प्रभाव पड़ता है। कीविड- 19 महामारी के बाद अध्ययन आदतों में महत्वपूर्ण परिवर्तन देखे गए। **[शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार (2022)]**की रिपोर्ट के अनुसार ऑनलाइन शिक्षा के विस्तार ने शहरी छात्रों की अध्ययन आदतों को सुदृढ किया, जबकि ग्रामीण छात्रों की तकनीकी संसाधनों के अभाव में अध्ययन मे कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। **[शिक्षा मंत्रालय (2025)]**के अनुसार नई शिक्षा नीति में अध्ययन कौशल, आत्म -अध्ययन और अनुभावात्मक अधिगम पर बल दिया गया है, जो माध्यमिक छात्रों की अध्ययन आदतों को मजबूत कने में सहायक सिद्ध हो सकता है। संबंधित साहित्य के अवलोकन से यह स्पष्ट है। कि वर्तमान अध्ययन के चरों को लेकर कुछ अध्ययन किए गए थे। लेकिन विज्ञान और प्रौधोगिकी की प्रगति के साथ नए सिरे से अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है। प्रस्तुत अध्ययन में इस संबंध में एक विनम्र प्रयास किया गया है।

संबंधित शोध साहित्य का अध्ययन:-विभिन्न शोधकर्ताओ द्वारा जो अध्ययन किया गया है। उन जानकोषों को संक्षिप्त जानकारी देने का प्रयास किया गया है,प्रस्तुत लघुशोध प्रबंध में संबंधित साहित्य का अभाव है। जो अग्रांकित है।

[डॉ रामशंकर शर्मा (2015)]ने"उत्तर भारत के चयनित शहरी एवं ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययन किया| उन्होने लगभग 200 छात्रों (100 शहरी, 100 ग्रामीण) का न्यादर्श यादृच्छिक

न्यादर्श विधि से लिया तथा अध्ययन आदत प्रभावली के माध्यम से आंकड़े एकत्र किए।**"[डॉ अमित कुमार (2016)]**ने "राज्य स्तर पर ग्रामीण स्वं नव-शही विद्यालयों में अध्ययन किया। उनके अध्ययन में लगभग 250 माध्यधिक छात्रों को शामिल किया गया। न्यादर्श चयन हेतु स्वीकृत यादृच्छिक विधि अपनाई गई और जानकारी प्रश्नवली विधि से प्राप्त की गई |**"[डॉ. अमित कुमार एवं डॉ. प्रदीप गुप्ता (2017)]**ने "जिला स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों से लगभग 300 छात्रों का चयन किया। उन्होंने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया तथा मनकीकृत अध्ययन आदत मापनी द्वारा आंकड़े संकलित किए|**"[राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT-2017)]**ने" राष्ट्रीय स्तर पर कई राज्यों के माध्यमिक विद्यालयों को शामिल किया। इसमें हजारों छात्रों का बहु-स्तरीय न्यादर्श चयन किया गया और जानकारी प्रश्नवली एवं द्वितीयक आकड़ो के माध्यम से प्राप्त की गई| **"[डॉ. सुनील वर्मा एवं डॉ० अंजली मिश्रा (2020)]**ने "कोविड -19 काल में शहरी एवं ग्रामीण छात्रों पर अध्ययन किया लगभग 200 छात्रों से जानकारी ऑनलाइन प्रश्नावली विधि द्वारा प्राप्त की गई |**"[डॉ. महेश पटेल (2021))]**ने "ग्रामीण एवं अर्ध-शहरी विद्यालयों में अध्ययन किया। उनके न्यादर्श में 150 माध्यमिक छात्र स्वं 20 शिक्षक शामिल थे आंकड़े प्रश्नवली एवं साक्षात्कार विधि से एकत्र किए गए **"[डॉ० राजेश सिंह एवं सहयोगी (2023)]**ने "ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययन कौशल प्रशिक्षण पर शोध किया। इनमें लगअम 120 छात्रों पर पूर्व-परीक्षण एवं पश्च -परीक्षण प्रश्नवली विधि अपनाई गई|**"[डॉ० अमित कुमार (2024)]**ने "जिला स्तर पर माध्यमिक छात्रों की अध्यान आदतों एवं मानसिक स्वास्थय का अध्ययन किया। न्यादर्थ आकार लगभग 200 छात्र थे। तथा प्रश्नवली विधि का प्रयोग किया गया|**"[डॉ० अनुराधा शुक्ला (2025)]**ने "ग्रामीण एवं नव शहरी क्षैत्रों में सामाजिक-आर्थिक कारकों के प्रभाव का अध्ययन किया। इसमें 180 छात्र एवं 30 अभिभावक शामिल थे और जानकारी प्रश्नावली तथा अभिभावक साक्षात्कार विधि से प्राप्त की गई |"

शोध के उद्देश्य:- शोध के निम्नलिखित उद्देश्य है।

1)माध्यमिक स्तर के छात्रों की अध्ययन आदतों का अध्ययन करना।

2)माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों की अध्ययन आदतों की तुलना करना।

3)माध्यमिक स्तर के छात्रों एव छात्राओं की अध्ययन आदतों की तुलना करना।

शोध की परिकल्पना:- शोध की परिकल्पना निम्नलिखित है|

1)माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के छात्रों की अध्ययन आदतों में कोई सार्थक अंतर

नहीं है।

2)माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की अध्ययन आदतों में कोई सार्थक अंतर नही है।

शोध का क्षेत्र व परिसीमन:- शोध के क्षेत्र में परिसीमन की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोध को निम्न प्रकार सीमाबद्ध किया गया है।

1)यह शोध अध्ययन केवल सहारनपुर जिले तक सीमित है।

2)यह शोध अध्ययन केवल यू०पी० बोर्ड माध्यमिक विद्यालयों तक सीमित है।

3)यह शोध अध्ययन केवल माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत 100 विधार्थियो तक सीमित है|

विधि :-

(चर): स्वतंत्र चर वह चर है जो किसी परिणाम के कारण का प्रतिनिधित्व करता है जब भी आश्रित चर में कोई भी परिवर्तन होता है तो यह आमतौर पर स्वतंत्र चर से परिवर्तन के कारण होता है

स्वतंत्र चर - क्षेत्र (शहरी/ ग्रामिण),छात्र एवं छात्राएं; **आश्रित चर-** अध्ययन आदतें।

[अनुसंधान डिजाइन]:- वर्तमान अध्ययन के लिए वर्णनात्मक (सर्वेक्षण शोध) डिजाईन का प्रयोग किया जाता है|

[अनुसंधान उपकरण]:- अध्ययन की आदत का परीक्षण [डॉ० दीप्ति शर्मा, डॉ० मसउद मंसारी]

[न्यादर्श] :- इस अनुसंधान में केवल 100 छात्र -छात्राओं को ही न्यादर्श हेतु चयनित किया गया है न्यादर्श सहारनपुर के माध्यमिक विद्यालय से लिया है। गौरी शंकर इंद्रपाल सिंह इंटर कालेज सहारनपुर (U. P)

आंकड़ों का विश्लेषण:-इस अध्ययन में माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण छात्रों की अध्ययन आदतों के प्रदत्तों का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है। जिसमे "टी-परीश्रण" का उपयोग किया गया। पूरे 100 छात्रों के प्रदत्तों के लिए t=0.31 प्राप्त हुआ। अतः शून्य परिकल्पना (माध्यमिक स्तर केशहरी एवं ग्रामीण छात्रों की अध्ययन आदतों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।)स्वीकृत की जाती है।औरइस अध्ययन में माध्यमिक स्तर के छात्र -छात्राओं की अध्ययन आदतों के प्रदत्तों का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है। जिसमे "टी-परीश्रण" का उपयोग किया गया। पूरे 100 छात्रों के प्रदत्तों के लिए t=0.77 प्राप्त हुआ। अतः शून्य परिकल्पना (माध्यमिक स्तर केशहरी एवं ग्रामीण छात्रों की अध्ययन आदतों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।)स्वीकृत की जाती है।

THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL ISSN : 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJINVALUE/
IMPACT FACTOR: 8.3
Volume–3,Issues–1 January-March:2026

[तालिका]:-1 माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण छात्रों की अध्ययन आदतों की तुलनात्मक गणना।

चर	छात्रों की संख्या	माध्यमन	मानक विचलन	स्वतंत्रता का अंश(df)	टी-मान	सार्थकस्तर
शहरी	57	172.25	16.78			0.05 व 0.01 पर असार्थक
ग्रामीण	43	173.42	19.61	98	0.31	

[सार्थकता स्तर 0.05 व 0.01 पर टी-मान]:- उपरोक्त तालिका में गणना द्वारा प्राप्त टी -मान 0.31 है। जो सार्थकता स्तर 0.05 व 0.01पर टी - मान के तालिका मान या मानक मान (क्रमशः 1.98, 2.63) से कम है। अतः शून्य परिकल्पना (माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण छात्रों की अध्ययन आदतों में कोई सार्थक अंतर नहीं है) स्वीकृत की जाती है।

[तालिका]:-2 माध्यमिक स्तर के छात्र -छात्राओं की अध्ययन आदतों की तुलनात्मक गणना।

चर	छात्रों की संख्या	माध्यमन	मानक विचलन	स्वतंत्रता का अंश(df)	टी-मान	सार्थकस्तर
छात्र	65	173.75	18.45			0.05 व 0.01 पर असार्थक
छात्राये	35	170.89	17.46	98	0.77	

[सार्थकता स्तर 0.05 व 0.01 पर टी-मान]:- उपरोक्त तालिका में गणना द्वारा प्राप्त टी -मान 0.77 है। जो सार्थकता स्तर 0.05 व 0.01पर टी - मान के तालिका मान या मानक मान (क्रमशः 1.98, 2.63) से कम है। अतः शून्य परिकल्पना (माध्यमिक स्तर के छात्र -छात्राओं की अध्ययन आदतों में कोई सार्थक अंतर नहीं है) स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष:-प्रस्तुत शोध में माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण छात्रों की अध्ययन आदतों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए टी-परीक्षण का प्रयोग किया गया, जिसमें टी-मान 0.31 प्राप्त हुआ। यह मान 0.05 एवं 0.01 के सार्थकता स्तर पर तालिकीय मान से कम पाया गया। अतः यह निष्कर्ष निकाला गया कि शहरी एवं ग्रामीण छात्रों की अध्ययन आदतों

में कोई सार्थक अंतर नहीं है तथा शून्य परिकल्पना स्वीकार की गई।

क्योंकि डॉ. रामशंकर शर्मा (2015) द्वारा किए गए अध्ययन में शहरी एवं ग्रामीण माध्यमिक छात्रों की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर पाया गया था। उनके शोध के अनुसार शहरी छात्रों की अध्ययन आदतें ग्रामीण छात्रों की तुलना में अधिक व्यवस्थित, नियमित तथा प्रभावी थीं। इस अंतर का प्रमुख कारण शहरी क्षेत्रों में बेहतर शैक्षिक संसाधन, पुस्तकालय सुविधाएँ, अनुकूल अध्ययन वातावरण एवं अभिभावकीय सहयोग को माना गया।

प्रस्तुत शोध में माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण छात्रों की अध्ययन आदतों में असार्थक अंतर पाए जाने का मुख्य कारण यह है कि वर्तमान समय में दोनों क्षेत्रों के विद्यालयों में शैक्षिक सुविधाएँ, पाठ्यक्रम, शिक्षण-विधियाँ तथा परीक्षा प्रणाली लगभग समान हो गई हैं। डिजिटल शिक्षा, ऑनलाइन संसाधनों और सरकारी शैक्षिक योजनाओं के विस्तार से ग्रामीण छात्रों को भी शहरी छात्रों के समान अध्ययन अवसर प्राप्त हो रहे हैं। इसके अतिरिक्त, नमूने का सामाजिक-आर्थिक स्तर तथा शिक्षकों की योग्यता भी लगभग समान होने के कारण अध्ययन आदतों में कोई सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

सुझाव:- आज के दौरे में दोनों ही वर्गो के छात्रों के लिए समान शैक्षिक नीतियाँ एवं कार्यक्रम लागू किए जाएँ।

विद्यालयों में अध्ययन कौशल, समय प्रबंधन नियमित अध्ययन तथा आत्म अनुशासन से संबंधित गतिविधियों को समान रूप सेप्रोत्साहित किया जाए। शिक्षको द्वारा सभी छात्रों को समान मार्गदर्शन और प्रेरणा दी जाए। साथ ही विद्यालयी वातावरण को सहयोगात्मक और प्रेरक बनाया जाए, जिसमें सभी छात्रों की अध्ययन आदतों का समग्र विकास हो सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ:-

(1)अग्रवाल, जे. सी. (2016). शैक्षिक अनुसंधान की विधियाँ. नई दिल्ली: शिप्रा पब्लिकेशन्स।
पृष्ठ संख्या: 45-60, 112-130

(2) कौल, लोकनाथ (2018). शैक्षिक अनुसंधान का परिचय. नई दिल्ली: विकास पब्लिशिंग हाउस।
पृष्ठ संख्या: 78-95, 201-215

(3) शर्मा, आर. ए. (2017). शिक्षा में सांख्यिकी एवं मापन. मेरठ: आर. लाल बुक डिपो।
पृष्ठ संख्या: 25-40, 150-165

(4) गुप्ता, एस. पी. (2019). शैक्षिक मनोविज्ञान. इलाहाबाद: साहित्य भवन।

पृष्ठ संख्या: 210-225, 260-275

(5) कुमार, अरविंद (2020). अध्ययन आदतें एवं शैक्षिक उपलब्धि. नई दिल्ली: अटलांटिक पब्लिशर्स।

पृष्ठ संख्या: 55-70, 101-118

(6) सिंह, आर. पी. (2021). ग्रामीण एवं शहरी शिक्षा की समस्याएँ. वाराणसी: चौखम्बा प्रकाशन।

पृष्ठ संख्या: 90-110, 180-195

(7) राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (NCERT). (2017). राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ढाँचा. नई दिल्ली: NCERT।

पृष्ठ संख्या: 27-35, 79-92

(8) NCERT. (2019). माध्यमिक शिक्षा में सुधार. नई दिल्ली: NCERT।

पृष्ठ संख्या: 41-58, 133-148

(9) UNESCO. (2020). शिक्षा की वैश्विक रिपोर्ट.

पृष्ठ संख्या: 64-82, 140-156

(10) शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार. (2020). नई शिक्षा नीति-2020.

पृष्ठ संख्या: 35-45, 65-72

(11) मिश्रा, के. एन. (2018). शिक्षा एवं समाज. पटना: भारती भवन।

(12) पृष्ठ संख्या: 120-138

वर्मा, बी. एल. (2022). कोविड-19 के बाद शिक्षा में परिवर्तन. नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन।

पृष्ठ संख्या: 55-75, 101-120